IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M06/2/ANHIN/SP1/HIN/TZ0/XX/T

HINDI *AB INITIO* – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI *AB INITIO* – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI *AB INITIO* – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 15 May 2006 (morning)
Lundi 15 mai 2006 (matin)
Lunes 15 de mayo de 2006 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N’ouvrez pas ce livret avant d’y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l’épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश (क)

पर्यटन का केन्द्र, आगरा और राजस्थान

आगरा शहर दिल्ली से लगभग 200 किलो मीटर दूर है। आगरा मुगल राजाओं की राजधानी थी। मुगलों की संस्कृति का रंग उनकी इमारतों पर साफ़ देखा जा सकता है। ताजमहल को शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़महल की याद में बनवाया था। ताजमहल एक सबसे सुंदर इमारत है जिसे प्यार की याद में बनाया गया। पूरी इमारत संगरमरमर की बनी हुई है और इसके चारों तरफ फव्वारे और बग़ीचे बने हैं।

आगरा के पास ही फतेहपुर सीक़री है जिसे अकबर ने लाल पत्थरों से बनवाया था। यह अकबर के समय में राजधानी भी थी। यहां की इमारतों में मुगल शैली के साथ साथ राजपूताना इमारतों की छाप भी देखी जा सकती है। आगरा जाने के लिए दिल्ली राज्य परिवहन की बसों में जाया जा सकता है। या फिर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से 'ताज एक्सप्रेस' रेलगाड़ी भी ली जा सकती है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर दिल्ली से 300 किलो मीटर दूर है। जयपुर की संस्कृति, पंरपरा, कला और भवन निर्माण बहुत सुंदर है। हवा महल, आमेर पैलेस, नहारगढ़ किला, जंतर मंतर के अलावा कई जगहें घूमने लायक हैं। राजस्थान में अन्य जगहों को देखने के लिए जयपुर को एक बरामदे के रूप में भी देखा जाता है।

दिल्ली से 6 घंटे की यात्रा करके आप भरतपुर पहुंच सकते हैं। भरतपुर कियोलादीओ राष्ट्रीय पार्क और भरतपुर बर्ड सैन्चुरी के नाम से भी जाना जाता है। यहां पर 400 तरह के करीब़ पक्षी और कई तरह के सांप और जन्तु रहते हैं। यह जगह बाहर से आने वाले पक्षियों और साइबेरियाई क्रेनस के लिए जानी जाती है। भरतपुर दीघा किला और म्यूज़ियम के लिए भी जाना जाता है जहां इस जगह का इतिहास मौजूद है।

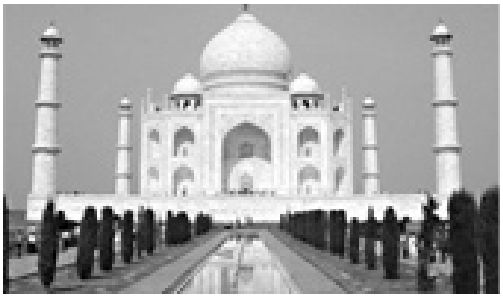

पाठांश (ख)

दादा साहेब फाल्के भारतीय सिनेमा के जनक

ढुंडीराज गोविन्द फाल्के जिन्हें लोग दादा साहेब फाल्के के नाम से भी जानते हैं उनकी याद में भारतीय सरकार ने 1969 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार की स्थापना की। उन्हे भारतीय सिनेमा का जन्मदाता भी माना जाता है। यह पुरस्कार हर साल किसी दिग्गज फिल्मी हस्ती को भारतीय सिनेमा के विकास के लिए दिया जाता है।

सिनेमा की शुरूआत 1895 के अंत में फ्रांस में हुई और 1896 के मध्य में यह भारत आया। इसमें दादा साहेब ने 1913 में भारत की सर्वप्रथम पूर्णत स्वदेश में बनी मूक फीचर फिल्म राजा हरिशचंद्र को परदे पर उतरा। उन्होने स्वंय इसकी पटकथा लिखी और निर्माण से लेकर निर्देशन तथा संपादन भी ख़ुद किया।

दरअसल 1910 में क्रिसमस के दौरान उनको मुम्बई के थियेटर में यीशु के जीवन पर बनी फिल्म देखने को मिली। वह इस फिल्म से इतना प्रभावित हुए कि उन्होने ऐसी ही एक फिल्म भगवान कृष्ण के जीवन पर बनाने का इरादा किया। चूंकि भगवान कृष्ण के जीवन पर फिल्म के लिए अपार धनराशि और विस्तृत तैयारियों की ज़रूरत थी इसलिए उन्होने पहले राजा हरिशचंद्र की कहानी पर फिल्म बनाने को चुना।

यह फिल्म मुम्बई के कोरोनेशन थियेटर में 3 मई 1913 को दिखाई गई। प्रैस ने इस फिल्म को बहुत सराहा यह फिल्म देखने के लिए लगातार 23 दिनों तक लोगों की भीड़ बनी रही। बाद में यह फिल्म उन हजारों फिल्मों और टेलीविज़न धारावाहिकों की प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुई जो प्राचीन संस्कृति और कहानियों पर आधारित थीं।

पाठांश (ग)

अनूशका शंकर से पत्रकार विभा की बातचीत के कुछ अंश

विभा – अपने बचपन के बारे में कुछ बताइए?

अनूशका – मेरा जन्म लंदन में हुआ। अपने बचपन के पहले दस साल मैंने लंदन में बिताए। मुझे नौ साल की उम्र से सितार बजाने की शिक्षा मिली। आप जानती हैं कि यह शिक्षा मुझे अपने पिता और सितार के जाने माने कलाकार पंडित रवि शंकर से मिली। अपने बचपन के दस साल लंदन में बिताने के बाद मैं 11 साल की उम्र में केलिफोर्निया चली गई। और मैंने संगीत की पहली प्रस्तुति 13 साल की उम्र में की।

विभा – इतनी कम उम्र से सितार बजाना आपने शुरू किया तो क्या आप शुरू से ही पेशेवर सितार वादक बनना चाहतीं थी?

अनूशका - मेरे मन में पेशेवर सितार वादक बनने की इच्छा तेज़ तब हुई जब मैं लगातार सितार बजाती रही। शुरू में तो मैं सिर्फ़ जानने की कोशिश ही करती रही। सितार के प्रति लगाव पैदा करने में मुझे कुछ साल तो लगे। हांलकि मैं हमेशा सितार सुनती रहती थी लेकिन मैं इसे अपने जीवन में अपनाऊं या नहीं इसके बारे में मैं पूरी तरह से सोच नहीं पाई थी।

विभा – इस कला को सीखने में मेहनत और साधना के अलावा आपके परिवार की क्या भूमिका रही?

अनूशका - जो मैंने सीखा उसमें परिवार की पंरपरा, सम्मान इस कदर शामिल था कि मैंने बचपन से किसी बात के लिए पिता को न करना या मना करना नहीं सीखा। हांलकि यह सही है कि मेरे माता पिता ने हमेशा वह सबकुछ करने दिया जो मैं करना चाहतीं थीं। छुट्टियों में अपने दोस्तों के साथ मैं जहां भी जाना चाहती थीं, मेरे माता पिता जाने देते थे।

विभा – यह बताइए कि अब तक आपके कितने एलबम आ चुके हैं?

अनूशका - अब तक मेरे तीन एलबम आ चुके हैं। पहला एलबम मेरे अपने नाम से ही आया था यानि 'अनूशका'। उसके बाद सन 2000 में अनुराग नामक एलबम आया। तीसरा एलबम 'लाईव करनेगी हॉल' नाम से जारी किया गया है।

विभा - क्या आपको अपनी बहन की सफलता से किसी किस्म की जलन होती है?

अनूशका – मुझे लगता है कि मेरा जलना कुछ ऐसा ही होगा जैसेकि मैं ब्रिटनी स्पीयर्स से जलूं। हम दोनों दो अलग किस्म का संगीत बजाते हैं और इसके बीच में किसी तरह की तुलना करना ठीक नहीं है। इसलिए अगर मैं अपनी बहन से जलूं तो यह बिल्कुल ठीक नहीं लगता।

पाठांश (घ)

मोबाईल फोन पर सरकारी प्रतिबंध क्यों?

मध्यप्रदेश सरकार ने स्कूलों में मोबाईल फोन के इस्तेमाल पर रोक लगा दी है। मध्यप्रदेश सरकार ने सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में मोबाईल फोन के दुरूपयोग को रोकने के लिए यह प्रतिबंध लगाने का फ़ैसला किया है। यह फ़ैसला कक्षाओं में पढ़ाई के समय मोबाईल फोन के दुरूपयोग की बढ़ती शिकायतों को रोकने के लिए लिया गया है। यह प्रतिबंध विद्यार्थियों और अध्यापकों दोनों पर लगाया गया है। कोई भी स्कूल इस प्रतिबंध को तोड़ेगा तो उसके ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की जाएगी।

हांलाकि कई छात्र इस प्रतिबंध से खुश नहीं हैं। उनका मानना है कि मोबाईल फोन से वह किसी मुश्किल में अपने माता पिता के साथ बातचीत कर सकते हैं। ख़ासतौर से यह छात्राओं के लिए उपयोगी साबित हुआ है। कुछ छात्रों का यह भी मानना है कि यह बातचीत का एक आसान और सस्ता माध्यम भी है।

परीक्षा के दौरान भी मोबाईल फोन ले जाने की मनाही होगी। परीक्षा के समय परीक्षकों को भी मोबाईल फोन नहीं ले जाने दिया जाएगा। इस प्रतिबंध की अभिभावकों ने तारीफ़ की और बताया कि कई बच्चे इसके दुरूपयोग का शिकार हुए है। ख़ासतौर से लड़कियां सड़कों पर घूमते रोमियों के फोन में लगे कैमरे का शिकार हुई है। इस प्रतिबंध से बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी। एक विद्यार्थी ने कहा कि अब कक्षा के समय पैदा होने वाली मुश्किलों से छुटकारा मिलेगा। यह नियम लागू होना शुरु हो गया है।